

श्री ३ वसुंधादे
वीणा वाह पुष्प
कृष्णदा पुष्प

आशा भट्ट

५१६

I

ASHA ARCHIVES

ॐ नमः श्रीवसुंधारणे ॥ कृपे दितेन विधिना परिपथमानाया धारया विविधिरत्नसुवर्णम
य्या पूर्ण करोति भवनं सहस्रैव सर्वतां सर्वलोकजननीं पुनमाप्ति भग्या ॥ त्वां देवी सर्वगुणरत्न
॥ १ ॥ महानिधानं सत्त्वार्थं कार्यधनधान्यसमृद्धिहेतोः ॥ तारुं हारमकुटमनिकल्पवृक्षावैहो
त्रेहो कनार्थं वसुंधा वसुंधा नामा ॥ इत्येव गेग भयमप्युरेण क देवा दारिद्र्यदुःखवृणा ऐह
रुणमोषधीनी सौभाग्यदुपगुणपूष्करजो बरणि सर्वददति तव पादसूरी नमामि ॥ १ ॥

कुशुतरूप परिपथमाना दुष्मी ददति विपुलां सुगतां पभोगां तां धारणी सकर सत्त्वहिते कचित्ता
भग्या नमामि सत्तर्त वसुंधारसंज्ञाः ॥ ॥ येवमप्यापुनमेकस्मै कस्मै समये भगवां कोशायां
महानाग्यां विहरति स्मः ॥ ॥ कंठकसूत्रे के महानवनवर्षा घोषिए एमे महताभिश्च संघेन
साहु संकटहे महप्रवक रसंख्ये कोटि सत्त्वैः महसत्त्वैः सर्वबुद्धगुणसमवागतैः ॥ तत्र खड्गभ
जवांतस्या वेहायां इमां मेव पर्वदितै पर्ववदित्यतः कुरमाणि सर्वददति दुःखार्तिवपरिशोषनीना
मधर्मपम्यायं देशपतिस्मः ॥ ॥ आदौ कृपाणां मध्यकृपाणां पर्ववसा कृपाणां स्वर्थस्वयार्जनं के

॥ २ ॥ वही परिपुर्ण परिपुष्ट पर्व वशात् वसु चर्ष्य संप्रकाशयति स्म ॥ तेन खलु पुनः समयेन कोशायां मह
नशायी सूचये नाम हं वतिः पुति वशां नि स्म ॥ उपशा ने दिपो वशा न मानसो वसु पुत्रो व
हृदहित ए वसु भव्य परिपुष्ट सस्यनः आहु मल आहुः तेन खलु पुनः समयेन येन भगवा
स्तेन उपसंक्रांत उपसंक्रम्यः भगवतः पादौ हिर सावदिता भगवन् संयेक सत सहस्र
प्रदक्षिने कुत का न्ने यवी दतः ॥ येका के निवर्णीः सूचये नाम हं वति भगवन् मेतद वो
चतः ॥ पृष्ट पमहं भगवन् तथा गत महर्त सस्य क्य बुधं कचि देव पुत्रे हं सये मे भगवां

न वका संकृष्यात् वया कट लाप ॥ पवं मूके भगवां सूचये हं वति मेतद वो चतः ॥ पृष्ट पं
गृह पते पद्य देवा कं भव्य हर्त तत् पुन व्या कट हो न चितं मा एध पि के ॥ येवं मूके सूचये ग
ह पतिः साधू भगवन् त्रि ति भगवन्तो वचनं पुति प्रभ भगवन् मेतद वो चतः ॥ कथं भगव
त्कृष्ट पुत्रो वा कृष्ट दूहिता वा दरिद्रो भूत्वा अदरिद्रो भवति ॥ व्यापित प्रभूत्वा अया धितो भ
वति ॥ अथ खलु भगवां उपनने वसु चन्दो गृह पति मेतद वो चतः ॥ दरिद्रो हं भगवन् दरिद्रो हं
सुगत् ॥ वसु वो यो वसु पुत्रो वसु दूहितो वसु भव्य परिपुष्ट सस्यनः ॥ न हि समतु भगवान्

॥ ३ ॥

संपर्क्यां येन दिदिदु स्यत्वा मुद ईरिदो भवेत् ॥ आधिः तप्यसत्वा मुद्याधिना भवेत् ॥ बहु धन
धां न्य रत्न सुवर्ण कोश को कौ गा ए भवेत् ॥ प्रिया मना वा म सम स नो ह द र्शनीया प्य भवेत् ॥
स न्य तपो महा दान पतन य प्य मुदी र्ण्य हि रण्य सुवर्ण धन धां न्य कोश को कौ गा ए प्य भवेत् ॥
मणि मू की व गु वे दु र्ग्य सुं र सि हा पु बा द दु प र म त ता मु म र क ट प म र ग स म द्वा प्य भवेत् ॥
सु प्र ति कि त गृ ह भो र्ण्य पू व द र द रिका दा सी दा स क र्म क र्म न स म्य त्रा क र्म क र्म च
भवेत् ॥ ये वं मू के भग वा क र्म सुं परि पू र के न पु न्न प्य र न स च न्द्रे गृ ह प ति मे त द वी च र ॥

॥ ३ ॥

अथी कृष्ट पूर्व भूत पुर्व मती ते धन्य त्रीत्यथ पू क र्मे पू यं दा सी ते न क हे न ते न स म ये न व ज ध र सा
गर नि र्गो वो ना म त था ग लो ह स म्य क र्म वृ द्धो लो क उ द या दि वि द्या च र ण स म्य त्रः सु ग लो लो क वि
न त्त रः पू रू ष द म्य सा र्थिः शा स्त्रा दे वा रां च म नू ष्या रां वृ द्धो भग वा त्त स्या के द्रि का म पा क
र पूर्व व सृ धा ए ना म धा र णी पु त्रा उ द र्शि वा धा रि ता वा चि ता दे प्रि ता व र्म वा षा अ नू मो दि ता
प र भ्य प्य वि ल रे णां पु क र्म दि ता अ ह म च त्ति ते कृष्ट पूर्व धा र णी त था भा वि ष ॥ य था आ म्ना धा

ॐ
॥५॥

नरिष्याः पुत्रावेन कृता पुत्र मानुषानविहेठयन्तिः अमानुषानविहेठयन्ति। देवानविहेठयन्ति। आवा
नविहेठयन्ति। यक्षानविहेठयन्ति। असुरानविहेठयन्ति॥ ओजानविहेठयन्ति॥ अपस्मारकानविहे
ठयन्ति॥ गन्धर्वानविहेठयन्ति॥ किन्नरानविहेठयन्ति॥ सहोदगानविहेठयन्ति॥ पुननानविहे
ठयन्ति॥ कटपुननानविहेठयन्ति॥ सर्वगुह्यनविहेठयन्ति॥ सर्वदेवानविहेठयन्ति॥ इन्द्रिप
ज्ञानविहेठयन्ति॥ सर्वाहएनविहेठयन्ति॥ येषं पावपूष्याहाः॥ कृताहा॥ पञ्चाहा॥ त्रि
आहा॥ त्रिभुवाहा॥ मूलाहा॥ गन्धाहा॥ धूपाहा॥ दीपाहा॥ माहाहा॥ आहूया

वत्स
४॥

हाहा॥ ओजाहाहा॥ वेदाहाहा॥ एसाहाहा॥ रजाहाहा॥ मा-साहाहा॥ मेघहाहा॥ असु-याहाहा॥ उ
घ्रिहाहाहा॥ धुक्काहाहा॥ जीविताहाहा॥ सर्वेनविहेठयन्ति॥ येषं पावद्विषहाहा॥ मूत्राहाहा॥
वेलाहाहा॥ हिंसनकाहाहा॥ क्रेदाहाहा॥ किन्नाहाहा॥ स्यत्रिभुवाहाहा॥ वान-महाहा॥ श्रेष्ठाहाहा॥
उद्दिष्टहाहा॥ अनूद्दिष्टहाहा॥ उद्दिष्टिनाहाहा॥ इत्याहाहा॥ गर्भाहाहा॥ सर्वेनविहेठयन्ति॥ स
र्वदाकि-यो-नविहेठयन्ति॥ दयानविहेठयन्ति॥ ज्ञानानविहेठयन्ति॥ आवानविहेठयन्ति॥ आ

५१
१५१

श्री
५५
नानाहाए ॥ रूपहाए ॥ इकाहाए ॥ ॥ गन्धाहाए ॥ एसाहाए ॥ स्पर्शाहाए ॥ ग्राह्यभाहाए ॥ नानाहृपा
हाए ॥ विरूपाहाए ॥ अनन्तरूपाहाए ॥ कामरूपाहाए ॥ विचित्ररूपाहाए ॥ वल्लभाहाए ॥ वदनाहाए ॥
असुखाहाए ॥ विचित्राहाए ॥ यात्रावद्विष्टाहाए ॥ नविहेठयनि ॥ पावतेवेचरा ॥ भूचरा ॥ अ
नरिष्टचरा ॥ पाताष्टचरा ॥ जलचरा ॥ वनचरा ॥ सर्वे ~~नविहेठयनि~~ ॥ येतेषां मम सर्वसि
त्वा नां च मम बज्राणामूहि स्फोटनाय प्रहृष्टाणामूहि फट् वड् एण सर्वदूषणं शर्वशुभांसा

५४
५५

एष २ शेष २ लम्बा २ वन्ध २ रुन्ध २ ५ रु २ पच २ मर २ माप २ सर्वसुत्रासप २ १ २ फल २ ह्य २ ॥
 यस्य च कृष्टपुत्रवा कृष्टदुहितृवा कृष्टपुत्रद्वयं गृहपतेव सुंधा ए नाम धारणी आहुत्य हृदये गता ग
 रुता हृदये गता पुष्टक गता भुति ॥ मात्रा गता पर्ववा प्रा मनसा सुवर्दि चिन्ता धारिता वा चित्ता हि
 विता अन्मोदिता पावर् पदेन ॥ अविष्टरेण सर्व पुका शीता ॥ तस्य कृष्टपुत्रस्य वा कृष्टदुहितृवा
 दीर्घ एव मर्थापदिता यस्त्वाय ३ ॥ अमाय सुत्रि आपयोगसंभा एव अविष्टति ॥ यत्पर्वमां वरं धार

५१
॥६॥

वसंधातमघाहृत्तथागतं भो हं त्वं सम्यक् सर्वदेवः ॥ इदं एव पुनः कृत्वा आवर्तते न संसृज्य
आवर्तते ॥ सर्वतथागतानां सर्वव्यवकृष्टानां सर्ववृद्धो विहसतीनां सर्वतथागतानां सर्वसूत
मन्त्रविद्यादेवतानां तेषां सर्वपूजाभिः पूजयेत् ॥ अत एव न त्रिचतुर्विहृतिः ॥ तस्य देवताया
र्त्तमनस्कः ॥ पुनर्दिताः प्रीतिस्तोमस्तथागता वाचयेत् ॥ तदा भगवत्या वसंधातमघाहृत्तथागत
गम्य धनधान्यं हिरण्यं चतुर्विधं वाचयेत् ॥ प्रीत्या तथागतं हृत्ते प्रीत्या वृद्धं पुनर्दिताः प्रीत्या च

वस
॥६॥

प्रीतिपुनर्दिताः प्रीत्या सर्वपुनर्दिताः प्रीत्या सर्वव्यवकृष्टो पुनर्दिताः प्रीत्याः पंचकृत्वा वरिष्ठतमं सूतम
न्त्रविद्यादेवता पुनर्दिताः प्रीत्या धर्मभानकस्याशयेन ॥ ॐ नमो एतन्मया ॥ ॐ नमो भगवते अर्चयेत्
संधातये ॥ ॐ नमो भगवते श्रीवज्रधारसगरनिर्वाणाय तथागतानां हर्षे संसृज्यं वृद्धाय ॥ ॐ न
मो भगवत्य भूयो भूयो तथागतानां हर्षे संसृज्यं वृद्धाय ॥ ॐ नमो भगवते सर्वतथागतानां हर्षे
संसृज्यं वृद्धाय ॥ ॐ नमो सर्वतथागतं भो धर्मीनां गतं पुन्यं पुनरेवा ॥ ॐ नमः क्षमंकरस्य तथाग
तस्य ॥ ॐ नमो वज्रधारसगरगम्भीरस्य तथागतस्य अगुणं प्राप्ते विपश्चादिभ्यः शाक्यं मृगिभ्यां दानं पा

ॐ
॥ १ ॥

मितापरिपूरणेनो भगवत्पुत्रः विषयिनिहसंज्ञसा मृधां च विविनसंज्ञा जिताय हतसंज्ञां वृद्धाय ॥ पुन
मोः सर्वलथा गलसंज्ञः पुनमो वंशं धरं सागारं गच्छी रंसां लंथां गीतो विष्णुभूषणाय चैककृद्वदवहेन
चः कनकसूने सिंहायाकाशपद्मधूतै गुना ॥ शाकसिंहस्य वीर्येण मेरुपथ्य प्रतिरूपां समुद्रांशुमेत
था गलस्य हमे मनु पदा ॥ सर्वसत्त्वहिता विद्याद्विदयाधिदूः स्वयसना एव मोचकेभ्यः हमां वसुधा एत
मधारणी विद्यारहस्य प्रवक्ष्यामि तथा गलभाषितस्यार्थ मनु पदान्य नृसमै मिता वृथा ॥ पुनर्हृद्वीध

२॥

न २ धनैर्वर्ष्यं बुद्धमाणे भुङ्ग्ये कोहो चिन्तितो व्यादनी मनसि साधनि मनो हृष्टसाधनी ॥ साधनकरि ॥ केटे
कोटं बह कोटि वर्ष्यं अनन्त सर्व एवावसाहं का एभरणा निधनधां न्य वृद्धि करि चिन्तितो वत्नी समोहनी
बुद्धस्य कोट्य कोट्य गार देहनी ॥ बहस्यते मानु मयं हृष्टिः वृद्धे २ वृद्ध सत्य धर्म सत्य संघ सत्य सर्ववृद्ध
बोध सत्व सत्यः बोधि प्राप्ता हृष्ट सत्य ॥ सर्व आक पुत्र्य क वृद्ध सत्यः वृष्ट सत्यः हृष्ट सत्यः लोक पाह सत्य ॥ ध
नदाज्ञान करि हिरं ऐ सूर्य मणि मूर्ति वज्र वेदुर्ग्यं हं विद्या प्रवाहु गलतुप रजत मरुगतः पद्म एग हृष्टि
हृक कर्तन सर्व दया सम हृष्टे ॥ चतुर्वर्ग विहि सह आणा प्राधि पत्य कायति ॥ यहि भगवति वंश धारणा

ॐ श्री १०॥ ॐ श्री धनदे सो भ को हो स्वाहा ॥ ॐ श्री इष्ट प्रदे स्वाहा ॥ ॐ श्री सर्व सुख प्रदे स्वाहा ॥ ॐ श्री धनदे धन द पूडि
ने स्वाहा ॥ ॐ श्री पूजनी म स्वाहा ॥ ॐ श्री अर्चना मे स्वाहा ॥ ॐ श्री अर्चना से स्वाहा ॥ ॐ श्री अनन से स्वा
हा ॥ ॐ श्री विनन से स्वाहा ॥ ॐ श्री अनन से विनन से स्वाहा ॥ ॐ श्री धिनन से स्वाहा ॥ ॐ श्री वि
धन से स्वाहा ॥ ॐ श्री विधन के सि स्वाहा ॥ ॐ श्री विधन दुये स्वाहा ॥ ॐ श्री विधन वि स्वाहा ॥ ॐ श्री
सुविधु दूरे स्वाहा ॥ ॐ श्री विधु दूरी हो स्वाहा ॥ ॐ श्री विगुनि विगुनि विगुणे स्वाहा ॥ ॐ

श्री विगुणि से स्वाहा ॥ ॐ अं कुरे स्वाहा ॥ ॐ श्री मं कुरे स्वाहा ॥ ॐ श्री प्रभं कुरे स्वाहा ॥ ॐ श्री अमा धी कुराज ॥
द्विं से स्वाहा ॥ ॐ श्री इष्ट सिद्धि प्रदे स्वाहा ॥ ॐ श्री प्रा कर्षि स्वाहा ॥ ॐ श्री आवेश नि स्वाहा ॥ ॐ श्री
प्रवेश नि स्वाहा ॥ ॐ श्री प्रवम नि स्वाहा ॥ ॐ श्री रिरि मे स्वाहा ॥ ॐ श्री दु मे स्वाहा ॥ ॐ श्री ध ध मे स्वा
हा ॥ ॐ श्री धि धि मे स्वाहा ॥ ॐ श्री ध ध मे स्वाहा ॥ ॐ श्री ख ख मे स्वाहा ॥ ॐ श्री ख ख मे स्वाहा ॥ ॐ श्री
लर २ स्वाहा ॥ ॐ श्री लरे लरे लरे लरे मे लर वि लर लर २ ॐ श्री लर लर लर लर मे लर धा ए ना
म धा ए ली म म सर्व सत्वा ना च इष्ट ज मे न स्वाहा ॥ श्री भगवति ॐ लारे लु लारे लु रे स्वाहा ॥ ॐ श्री भग

५१
११११

पत्र
१११

नां च सर्वानां परिपूरकेण मम सर्वसत्त्वानां च गृहे आनन्दगतात्मा पृथिवी गतात्मा स्थूल गतात्मा अन्न
रक्ष गतात्मा भूमि गतात्मा स्वर्ग गतात्मा मर्त्य गतात्मा पाताल गतात्मा समुद्र गतात्मा सप्त द्वीपोक्त गतात्मा
सर्वत्र गतात्मा पर्वतान्म गतात्मा भगवति वसुधारे शुक्ली गृहे मणि मुक्ति वज्र वैदुष्यं शुक्ल शिखर
बाद गतात्मा रजत मरकत मृणाल गतात्मा कर्कश पद्म एतन्म नीलोत्पलैक एतानि सुवर्ण रजत ता
म्रलोह धातु मूल जीवादीनि चानेक धन धान्य चतुःषष्टी श्री ह्रीं सहस्राणि च मम सर्वसत्त्वानां च
कोट्युकोट्यो गतात्मा च सर्वोपकट एतानि भद्र २ भद्राणि स्यात् ॥ कुम्भी मम सर्वानां परिपूरक एव स्यात् ॥

ॐ श्री भुव नि स्वाहा ॥ ॐ श्री शान्त म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री महा भुव म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री महा म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री
पू की म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री महा र्च म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री जय म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री विजय म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री
गु र्दी ए लि सु रे न पु र्त्त नि म हा ते जः ॥ ॐ श्री महा शान्त म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री महा पौ की म ती स्वा
हा ॥ ॐ श्री सर्व ज न व सं क ति स्वाहा ॥ ॐ श्री सर्व दु ष्ट न कृ त ति स्वाहा ॥ ॐ श्री सर्व सु बु वि ना श
नि हं कृ त्वा हा ॥ ॐ श्री आ ग दृ ग दृ स म प म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री हृ द य म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री

उ प हृ द य म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री आ र्के रा म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री आ धार म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री
ॐ श्री महा पु भा व म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री धृ ति म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ स्व भा व म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ
ॐ श्री जय म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री विजय म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री सर्व त था ग त वि ष म नू स्म र
स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र धा रे स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र धा रे स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र
धे स्वाहा ॥ ॐ श्री सू व स्र धे स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र सू वि स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र धा रि स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र म
नि वि ये स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र धा रे रा गे ये स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र म ति प्रि ये स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र धा रे धा र

श्री
१३

ली धारणी वसुंधारणि ये स्वाहा ॥ नृ श्रीक्ष्मी ये स्वाहा ॥ नृ श्रीक्ष्मी भूतनिवासनि ये स्वाहा ॥
नृ श्रीमहाक्ष्मी भूतनिवासनि ये स्वाहा ॥ नृ श्री वसुधे नृ श्री प्रिये श्री करि धन करि धान्य करि
श्री स्वाहा ॥ नृ श्री वसुधारे श्री स्वाहा ॥ नृ श्री वसुंधारनी धारणी धारणी स्वाहा ॥ श्री समये +
सौम्य समर्थ करि महा समये स्वाहा ॥ नृ श्री धन धान्य करि समये श्री करि वसुधे रि वसुधे स्वाहा ॥
नृ श्री वसुधारे ये शो हि भगवति समं य मनस्मर सिद्धिं कुरु मे हूँ स्वाहा ॥ नृ श्री वसुंधारणि र्श्री व
रपुत्रये सर्व धन धान्य सर्व वसु एवाहं कार सर्व श्री क्षीमादिभिः सर्वोपकारोः समुद्धि मे देहि श

वसु
१३

किं पूर्णि च भू सिद्धिं च ददाय स्वाहा ॥ नृ श्री धन धान्याय विप्रदे सर्व एत वसुधा हं कार सर्वोपकारणानि
धी महें ततो श्री वसुंधारणी प्रचो दया ये स्वाहा ॥ नृ स्वाहा ॥ अस्वाहा ॥ स्वहाहा ॥ स्वः स्वाहा ॥ ह्रींः स्वाहा ॥
स्वाहाहा ॥ हाः स्वाहा ॥ नृ यान पात्रा वहे दूरागा मिनि अतुत्पन्ना नां दुवाणां मृत्यादनि दुत्पन्नाणां व
द्वि करि दिति २ इत २ आगद २ भगवति मा विहं स्व मम सर्व सत्या नां च मनो रथं परि पूरय दसभ्यो
दिभ्यो यथोदक धार परि पूरय किं महि यथा भास्करो रस्मी ना विधमय किः ॥ यथा क्षितां अनाया
य किं सर्वो वधी ॥ यथा महोष धयः सर्व रोगा नासयन्तेः धनदो वरुण औ व इन्द्रो वै अवरा स तथा ॥

श्री
१००

पथावहते मतो नृगा मिनी सिद्धि चिन्तयन्तु सत्तर्प सर्वसांप्रपद्य पथाकासं सिद्धिर्मेवलुनशंसया
मनामदानिः ॥ तद्यथा ॥ ॐ खड्ग २ खिडि २ खड्ग २ प्रथ २ मूढ २ मूढ २ लफ्टि २ मेह २ दवा पय स्वाहा ॥
ॐ उल्लिहिरण्यसुवर्णधारे स्वाहा ॥ ॐ वस्त्राभरणाय स्वाहा ॥ ॐ अन्नपानाय स्वाहा ॥ ॐ वस्त्रमि
धानाय स्वाहा ॥ ॐ वस्त्रधारे स्वाहा ॥ ॐ वस्त्रधाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ वस्त्रा स्वाहा ॥ ॐ गौ स्वाहा ॥ ॐ
सुरभ्ये स्वाहा ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ वांश्चिके स्वाहा ॥ ॐ यमाय स्वाहा ॥ ॐ वज्रनाय स्वाहा ॥ ॐ वैश्रव

वर्ष
१४

णाय स्वाहा ॥ ॐ विरूपाय स्वाहा ॥ ॐ विरूपाय स्वाहा ॥ ॐ धनराधकाय स्वाहा ॥ ॐ कूवेराय स्वा
हा ॥ ॐ अग्नेय स्वाहा ॥ ॐ नैऋत्य स्वाहा ॥ ॐ वायुवे स्वाहा ॥ ॐ ईशानाय स्वाहा ॥ ॐ अन्ननाय स्वाहा
ॐ कूर्तिकाय स्वाहा ॥ ॐ वासुकीय स्वाहा ॥ ॐ सरवपाहाय स्वाहा ॥ ॐ भकाय स्वाहा ॥ ॐ महा
पद्माय स्वाहा ॥ ॐ कर्कटकाय स्वाहा ॥ ॐ पद्माय स्वाहा ॥ ॐ अश्वनागाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ अ
सुरधिपतये स्वाहा ॥ ॐ सूर्याय स्वाहा ॥ ॐ चन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ अश्वनागाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ

श्री

१५

दिशि लोकपाहाय स्वाहा ॥ नृविदिशि लोकपाहाय स्वाहा ॥ नृसर्वलोकपाहाय स्वाहा ॥ नृसर्वध
नधान्यसुवर्णनिधानिमांदेहि ददाय स्वाहा ॥ नृवसंधे स्वाहा ॥ वसंधाधिपतये स्वाहा ॥ नृ
सर्वदेवाय नमः स्वाहा ॥ नृसर्वनागाय नमः स्वाहा ॥ नृसर्वयथाधिपतये नमः स्वाहा ॥ नृसर्व
भूताधिपतये नमः स्वाहा ॥ नृसर्वप्रेताधिपतये नमः स्वाहा ॥ नृसर्वमातृताधिपतये नमः स्वा
हा ॥ नृपवनाधिपतये स्वाहा ॥ नृसर्वगृहाधिपतये स्वाहा ॥ नृसर्वपिशुंयाधिपतये नमः स्वा
हा ॥ नृसर्वमसृमातृताधिपतये नमः स्वाहा ॥ नृसर्वदुकिनीभ्यो नमः स्वाहा ॥ नृसर्वपिशुंय

वर्त

॥ १५ ॥

निभ्यो नमः स्वाहा ॥ नृसर्वयथानिभ्यो नमः स्वाहा ॥ नृसर्वमाहाकाएय नमः स्वाहा ॥ नृसर्वमातृभ्यो
नमः स्वाहा ॥ नृसर्वभूतादिभ्यो नमः स्वाहा ॥ नृसर्वभूतानिभ्यो नमः स्वाहा ॥ येन वांमम सर्वस
त्वा नां च धनधान्यसुवर्णनिधानिमांदेहि ददाय स्वाहा ॥ नृश्रीगुण्य वदो किते धराय
ह्र स्वाहा ॥ नृमनिपदे ह्र स्वाहा ॥ नृवज्रपा नये वज्रधराय ह्र स्वाहा ॥ नृऽमहज हरेन्द्राय ह्र स्वा
हा ॥ नृमानिभद्राय स्वाहा ॥ नृपूर्णभद्राय स्वाहा ॥ नृवैभवाय स्वाहा ॥ नृधनंदाय
स्वाहा ॥ नृसदाधनदाय स्वाहा ॥ नृनन्ददेवी नमः स्वाहा ॥ नृसुनन्ददेवी नमः स्वाहा ॥ नृभद्रा

720

कस
११॥

[illegible]

॥ श्री ॥
॥ १५ ॥

स्वालो पूजातेषो विकारं स्वगुरुवा परगुरुवा अह्मपा वसुधा ए भगता रिका पा वा पदस्वा भगुतो
नृपा सो र्ध चन्दनेन चतुरस्रं मन्दं कृत्वा पूष धूप दीप गन्ध माह्य विष्टे पतन चरणी चीवा र्ध
ध्वज दं था पताका पशो भित्तैर्वर्ति नैव द्रवि विविधो पचारै यथा विभवे पूजा कृत्वा धर्म भाणा आ
विस्मय गन्ध जल स्नातः सुगन्धगः पुचि वस्तु प्रावृत्तो मयुर सप्तो परि समुप विभूष पुतिमा पदादि
कं स्थापयित्वा लभे वा नृसम्य सुयो द्या वेहा यां पूजायित्वा पुत्र ह मखलु समा दान लो पाव दे वास
नियमेन धारणी मविदिन मावर्तयेत् । श्रीनिवा एणित्तः कृष्ट पूजो कृष्ट दूहिता वा माहा पूष

वसु ॥
१५ ॥

मात्रपा वसुधा एया गुरु पटि पूरयति । सर्व धन धान्य हि रण्य सुवर्णः सर्व पकरणे ॥ सर्व पदवा
पुन नाशयति । पहात ये व पुत्र्य व सुगन्ध जल स्नातः पुचि वस्तु चतो मयु वा न र्हितो निहा मिखा
हा वरा भोजी वृष चारि भूत्वा पोकि कार्थ स्वगुरुवा पर गुरुवा पुन स्थाने को सु को सु गा र्वा च
दनेन चतुरस्रं कृत्वा भगवतः श्री मदा या वतो किते ॥ स्वतथा गतस्य सर्व आवक पुत्र्य क
पुध पोधि सत्वा ना माहा मृदा मनु विद्या देवता पाप्मा गुतो यथा विभवे उदा र्ध पूजा कृत्वा सुसमा हि
त स्था मे व भगवती मा येनै क चित्तोत्पा दो दान पति हित सुखा सुय अउपा स नि दाना सि मां धार
॥ पदम अया ॥

॥ श्री ॥
॥ २० ॥

एषी मेकमहो एत्रं सप्रा हो एत्राणि पोर एनाद्य यत्रा विद्विन्मा वर्तयेत् । आचार्यः तथैव नियमेन स
गो लिं कुत्वा सर्ववर्ष पदार्थैः पूजयेत् ॥ तथैव दानपतिरपि नियमेन सर्वमाचरेत् ॥ पाथका
यथाशुभ्या सुवर्णादिदानं दद्यात् ॥ ततः पाठितसिद्धु भवति । ततः अणुमात्रमागुरु पतिवसुधा
एषा महापुरुषमात्रमागुरु परिपरिपूरयति । सर्वधनधान्यद्विरूप सर्वैर्लुकिभिः सर्वोपकारो
प्राप्त्यर्थं पदुवांश्च नाशयति । ततः हित्वं गुरुपते सर्वप्रयत्नेनागुरुत्वे सां वसंधारा नाम धारणाम
धारणी धारयेद्देश्य गुरुपते पर्यवा पूहि परेभ्यश्च विसर्जयेत् प्रकाशयति ॥ ततो भविष्यति दीर्घाय

वसु ॥
२० ॥

अमर्थावहिताय सुखाय भोगाय योः गुरुभा एष सुविभाषयेति । ततः साधुभगवन्निति प्रतिष्ठा
भगवतोः सुचन्दो नाम गुरुपते भगवतोः निष्कादिमां वसंधारा नाम धारणी भुत्वा हस्तः तुष्ट ५६ ग
आत्मनाः पुनर्दिताः श्रीति हो मनस्य जातो भगवत्पराणां नियत्य कृतकरपूठे भूत्वा भगवन्
मेतदबोचते ॥ ५५ हित्वा मे भगवन्नियं वसंधारा नाम धारणी पुष्टि कृता ॥ धारिता वाचिता पर्यवा
प्राप्तमोदिता मनसा सुपरिचिन्तिता परेभ्यश्च विसर्जयेत् सं प्रकाशयिष्यामिः । अथ तत्परा
एषा मात्रा सुचन्दो गुरुपतेः परिपूरी कोष्ठ कोष्ठ गुरुभा ॥ अथ खट्व सुचन्दो नाम गुरुपते

॥ श्री ॥
॥ २१ ॥

भगवन्कमनेकदूतसहप्रदक्षिणीकृत्यभगवतः पादौ शिरसाभिवन्द्य भगवन्प्रणमः पुनरव-
 लोकि तेष्वप्यभगवतां धनिकास्वगृहे प्रकान्तः प्रकंस्य च स्वगृहपति एव नृपुत्रविभूषादासी-
 त्परिपूर्णा सर्वधनधान्यसमृद्धि सर्वोपकरणे प्रकोशकोष्ठगणैश्च परिपूर्णं निदुःखं
 च विस्मिता हृष्टा हृष्टा उदगुप्राप्तमनाः प्रसूदिताः प्रीति सौमनस्यजातः परिपूर्णं मनोऽर्थः परि-
 पूर्यमाणो कुरुक्षेत्रं मुदुस्मिधहृदयो वृद्ध भगवति वसुधाएनामधा एषा चली प्रेममगुह्यं गो-
 एवं प्रसादवद्मानं चित्रीकारं च बोधितं तस्मादयति ॥ अथारब्धभगवाना मूषकं सा नन्दमास

वसु ॥
२१ ॥

नृपते स्म ॥ गदत्वं मानन्दसुखदुःखगृहपते एगाहं परिपूर्णा सर्वधनधान्यसमृद्धि सर्वदलसुवर्ण-
 दिभिः सर्वोपकरणे प्रकोशकोष्ठगणैश्च परिपूर्णं निषण्ण ॥ अथारब्धभगवाना नन्दो
 भगवतो वचनं प्रतिपद्यते कोशाली महा नगरी येन लेखदुःखगृहपते निवसन्ते नोपसङ्ग-
 म्यो भगवन्परिविभूषादासीत् ॥ परिपूर्णा सर्वधनधान्यसमृद्धि एव समृद्धि महाकोशकोष्ठगणैश्च
 दृष्टा हृष्टा हृष्टा उदगुप्राप्तमनाः प्रसूदिताः प्रीति सौमनस्यजाता येन भगवानेनोपसङ्कान् उपस-
 कृम्या मूषाना नन्दो विस्मितः प्रीति सौमनस्यजातो भगवतः पादौ शिरसाभिवन्द्य भगवन्प्रणमः

॥ श्री
॥ २२

वोचत् ॥ को भगवन् कः प्रत्ययो येन सूचयेतामा गुरुपतिर्महा भोगो महाकोशकोष्ठगारधनधा
न्यहिरन्यसुवर्णरत्नजातसमृद्धजातः ॥ भगवानाह ॥ आह्वनन्दगुरुपतिः परमआहुः कल्या
णाप्रयोधारिताचलेनेयस्वसूधारनामधारणी प्रवर्तिताऽऽहिताधारितावाचितापर्यनाप्रा
प्नुमोदितापरेभ्यश्चविस्तरणी प्रकाशितेति । तेनानन्दत्वमप्युद्गीषेमास्वसूधारनामधार
णीधारयेत्तादृशहोत्रोदेष्टुपपर्यधापूहि परेभ्यश्चविस्तरणी प्रकाशयतेतद्विषयतिवद्भुज
नहिताये सुखाये ह्येकानूकपाये महतो जनकायस्यार्थापहिताय सुखाय देवानां च यस्य कृष्टपू

वत् ॥
२२ ॥

तस्यानन्दपर्यधारणी ह्युत्तमा पूजकगताभुतिमात्रगताभविष्यति । उद्दिताहृद्यगतावाचिता
गुरुगतापूजितां च भविष्यति । तस्य कृष्टे पूर्वस्य दुर्भिक्षभयं न भविष्यति । क्रमेण तस्य विना
याः समृद्धिर्न भूजन् हिताय बहुजनसुखाय ह्येकानूकपायं महतो जनकायस्यार्थापहिता
य सुखाय देवानां च मनुष्याणां च । नाहमो नन्दतर्धमसमनूपशान्तिसुदेवके समारके सुवृत्तके
सहस्रभूषणवस्त्रकायां प्रयां सुदेवमानूषायां यदमाविद्या मन्येथा कटिष्यति ॥ पुनिक्रमिष्यति
वानेवस्थानं विद्याते ॥ तत्कस्य हेतो एतेनानिर्गुणान्या नन्दवस्त्रधारनामधारणी मनुपदानि

॥ श्री ॥
॥ २३ ॥

न च तानि भूमीन कू सुहृ मूहानां अति पथमागमिष्यन्ति । कः पूनर्वा दौ यानि पूस्तक गतानि ह
दय गतानि धा दयिष्यन्ति ॥ वाचयिष्यन्ति ॥ पर्यावाप्यन्ति ॥ लंक नस्य हे लोः ॥ सर्वसंथागतं
हते भाषिता अधिष्ठाता धारिता ह्यमृदु पा मृदिता प्रकाशिता । अनुमोदिता प्रभाविता प्रशस्त
संवाहिता विवृता उद्घाती कुलाप्राप्त चिता प्राख्याता दीर्घाणां सत्त्वानां नाना सर्वधाधिपति
हितानां सर्वदुःखभयापदनामथापहिताय सुखाय सौभाग्यं परिभोगाय सौभाग्यं यचेति ॥ अने
दाह ॥ इति हितमे भगवेत्रिपं वसुधा एनामधारनीता वाचिता पर्यावाप्या अनुमोदिता मनसा

वसं ॥
२३ ॥

सुप्रदिचिनिता च साधु भगवन्निति ॥ अथ खट्वा पूष्पानां नन्दुः स्थापासनादेकाशमूला एतर्ग
कुत्वा दक्षिणां जानुमन्दं पुच्छिष्यां प्रतिस्थाप्य येन भगवांस्तेनां जतिं पुनं मय कृत कर पूजो भ
त्वा भगवन्क मय गोक्य तस्या देहायां मिमा गाथा मभाषत ॥ अचिन्त्यो दुःख समुदये सदा ॥
अनेकैर्न सुसमृद्ध कंधारैः ॥ अपूर्ण एहि दुहेषु मण्डपैः ॥ नमो सुते श्रीवसुधा एतौ सदा
अचिन्त्यो भगवां वृद्धे वृद्ध धर्मा अचिन्त्या ॥ अचिन्त्यो निपुर्णनामो विपाक प्राप्ये चिन्त्या ॥ शा
स्ता ज्ञानय सर्वसं धर्मा एतं परं परा । वारुणमी कर्तुं प्राप्ते वृद्धे कीर नमो सुते ॥ ॥ अथ खट्वा पूष्पा

॥ ५१ ॥
॥ २५ ॥

जया धर्म नी चक्रः श्री ३ वसुधा देवीया पाथ पूषक स पू - यो या हि धी का दिः न ज्ञे ॥ ३३
व्यपूषक हो भया कः वंच म हा पा प हा कः ॥ ३३ ॥ ह न मौ ह भा वों ह भाः पा प हा कः ॥ ३४
 २०५ भा ड कु ल च नु द सी ॥ पु क बा र ॥ थु गु दी स स्व ष भा ना च नु मा न पा ना
 मं ॥ अ म ना ए ज नं श्री ३ थु गु पू ष क द न वि या ज्ञे ॥ ३५ ॥ ३५ ॥ ३५ ॥ ३५ ॥

५६॥
२५॥

ASHA ASSOCIATES

426

工